तैंतीस

प्रचार कार्य के भेद

Secrets of Evangelism

जब इब्राहीम ने अपने पुत्र, इसहाक को भेंट स्वरूप देने की इच्छा को दिखाया तब परमेश्वर ने उससे प्रतिज्ञा की:

> और पृथ्वी की सारी जातियां अपने को तेरे वंश के कारण धन्य मानेंगी: क्योंकि तू ने मेरी बात मानी है (उत्प. 22:18)।

प्रेरित पौलुस इस ओर संकेत करता है कि यह प्रतिज्ञा इब्रीहिम और उसके *वंश*, एकवचन, *वंशों*– द्विवचन में नहीं की गई थी, और यह कि वह एकमात्र वंश मसीह था (देखें गल. 3:16)। मसीह में सारी जातियां, यदि अधिक सही रूप में कहा जाए तो पृथ्वी के सभी सांप्रदायिक समूह आशीषित होंगे। इब्राहीम से की गई प्रतिज्ञा में हज़ारों अन्यजाति सांप्रदायिक समूहो को सम्मिलित किया गया। ये सांप्रदायिक समूह भिन्न भौगोलिक क्षेत्रों में रहते हुए एक दूसरे से भिन्न हैं। परमेश्वर उन सभी को मसीह में आशीष देना चाहता है, इसी कारण यीशु समस्त संसार के पापों के लिए मारा गया (देखें 1यूह. 2:2)।

यद्यपि यीशु ने कहा कि जीवन की ओर ले जानेवाला मार्ग सकरा है, और कुछ ही इसे पाते हैं (देखें मत्ती 7:14), प्रेरित यूहन्ना हमें यह विश्वास कराने को एक अच्छा कारण छोड़ देता है कि परमेश्वर के भावी राज्य में सारे संसार के सामुदायिक समूहों से प्रतिनिधि होंगे:

> इसके बाद मैंने दृष्टि की, और देखा, *हर एक जाति, और कुल, और लोग, और भाषा से* एक ऐसी बड़ी भीड़, जिसे कोई गिन नहीं सकता था श्वेत वस्त्र पहने, और अपने हाथों में खजूर की डालियां लिए हुए सिंहासन के सामने और मेम्ने के सामने खड़ी है। और बड़े शब्द से पुकारकर कहती है, कि ''उद्धार के लिए

हमारे परमेश्वर का जो सिंहासन पर बैठा है, और मेम्ने का जय-जयकार हो'' (प्रका. 7:9-10, पर बल दिया गया है।)।

अत: इस बड़ी अपेक्षा के साथ कि परमेश्वर की संतान एक दिन परमेश्वर के सिंहासन के सामने बहु-सांप्रदायिक समूह के साथ जुड़ेगी, परमेश्वर की ओर हमें देखना है।

अधिकांश समकालिक मिशनरी रणनीतियों ने संसार के चारों ओर शेष बचे हज़ारों ''छिपे'' सांप्रदायिक समूहों तक पहुंचने पर बल दिया है, उनमें से प्रत्येक में एक व्यवहार्य कलीसिया की स्थापना करने की आज्ञा के साथ। यह निश्चय ही सराहनीय है, क्योंकि यीशु ने हमें सारे जगत में जाने और ''सभी जातियों (अक्षरश: *सांप्रदायिक समूहों)* को शिष्य बनाने की आज्ञा दी है'' (मत्ती 28:19)। तौभी, मनुष्यों की योजनाएं, चाहे वे कितनी ही भली मंशा से क्यों न बनाई गई हों, लेकिन यदि उनमें पवित्रात्मा के मार्गदर्शन की अवहेलना की जाए तो यह भलाई की तुलना में अधिक हानि पहुंचा सकती हैं। परमेश्वर के राज्य के निर्माण की खोज करने के लिए उसकी बुद्धि का अनुसरण करना ज़रूरी है। उसने इस बारे में हमें अत्यधिक जानकारी और निर्देश दिये कि मत्ती 28:19 में जो पाया जाता है उसकी तुलना में हमें संसार के चारों ओर शिष्यों को कैसे बनाना है।

शायद इस सच्चाई की सबसे अधिक उपेक्षा उन लोगों के द्वारा की जाती है जो महान आज्ञा की पूर्ति करने में संघर्षरत् होते हैं कि *परमेश्वर* सबसे महान सुसमाचार-प्रचारक है, और हमसे उसके *साथ* कार्य करने की अपेक्षा की गई है, न कि *उसके लिए कार्य करने की।* वह संसार तक सुसमाचार के साथ पहुंचने की चिन्ता किसी भी अन्य व्यक्ति से अधिक करता है, और वह अन्त तक कार्य किसी और से अधिक निष्ठा के साथ करता है। वह था, और है, और वह इसके प्रति इतना अधिक समर्पित था कि वह इसके लिये मारा गया, और किसी की भी रचना के किये जाने से पूर्व वह इस बारे में सोच रहा था, और अभी भी कार्यरत् है। यही वचनबद्धता है।

''मसीह के लिए संसार को जीतना''

"Winning the World For Christ"

यह रोचक है कि नये नियम की पत्रियों को पढ़ने पर, हम विश्वासियों के लिये किसी भी उत्तेजक निवेदन को नहीं पाते (जैसा हम आज सामान्यता पाते हैं) कि ''बाहर निकलकर मसीह के लिए संसार तक पहुंचें।'' आरम्भिक मसीहियों और मसीही अगुवों ने माना कि संसार को छुटकारा दिलाने के लिए *परमेश्वर* बहुत प्रयास से कार्य कर रहा था, और उनका कार्य उसके नेतृत्व में उन्हें सहयोग देने का था। यदि किसी ने इसे जाना था तो वह प्रेरित पौलुस था, जिसे कोई भी ''प्रभु के पास नहीं लेकर

गया था।'' इसके विपरीत, जिस समय वह दमिश्क को जा रहा था उसका रूपान्तरण परमेश्वर के द्वारा किया गया था। और पूरी प्रेरितों के काम पुस्तक में हम कलीसियाओं को विस्तृत होता हुआ पाते हैं क्योंकि आत्मा द्वारा अभिषिक्त और आत्मा के नेतृत्व में चलनेवाले लोगों ने पवित्र आत्मा को सहयोग दिया। प्रेरितों के काम पुस्तक जिसे सामान्यता ''प्रेरित द्वारा किये जाने वाले कार्यों की पुस्तक कहा जाता है, उसे वास्तव में ''परमेश्वर को कार्यों की पुस्तक'' कहना चाहिए। प्रेरितों के काम पुस्तक में लूका ने परिचय में कहा कि उसका प्रथम विवरण (सुसमाचार जिसमें उसका नाम है) इस बारे में है ''जो कुछ यीशु ने करना और सिखाना *आरम्भ* किया था'' (प्रेरित. 1:1, पर बल दिया गया है)। निस्संदेह लूका ने यह विश्वास किया कि प्रेरितों के काम पुस्तक उसका एक विवरण थी जो– यीशु ने करना और सिखाना *जारी* रखा था। उसने आत्मा द्वारा अभिषिक्त और आत्मा के नेतृत्व में जाने वाले सेवकों के साथ कार्य किया, जिन्होंने उसे अपना सहयोग दिया।

यदि आरम्भिक मसीहियों को ''वहां से निकलकर अपने पड़ोसियों को गवाही देने और मसीह के लिए संसार को जीतने में सहायता करने को'' नहीं भेजा गया था तो परमेश्वर के राज्य के निर्माण में उनकी क्या भूमिका थी? वे जो कि विशिष्ट रूप से नहीं बुलाए गए थे और सार्वजनिक रूप से परमेश्वर की घोषणा करने को वरदान प्राप्त थे (प्रेरित और प्रचारक), वे पवित्र और आज्ञाकारी जीवन बिताने के लिए बुलाए गए थे, और उनसे बचाव करने को तैयार रहने को जो उनकी निन्दा करते या उनसे प्रश्न करते। उदाहरण के लिए, पौलुस ने लिखा,

> और यदि तुम धर्म के कारण दुख भी उठाओ, तो धन्य हो, उनके डराने से मत डरो, और न घबराओ। पर मसीह को प्रभु जानकर अपने अपने मन में पवित्र समझो, और जो कोई तुम से तुम्हारी आशा के विषय में कुछ पूछे, तो उसे उत्तर देने के लिये सर्वदा तैयार रहो, पर नम्रता और भय के साथ। और विवेक भी शुद्ध रखो, इसलिये कि जिन बातों के विषय में तुम्हारी बदनामी होती है, उनके विषय में वे जो तुम्हारे मसीही अच्छे चाल-चलन का अपमान करते हैं लज्जित हों (1 पत. 3:14-16)।

ध्यान दें कि जिन मसीहियों को पतरस ने लिखा वे सताव को सह रहे थे। यदि मसीही संसार से भिन्न नहीं होते तो संसार उन्हें नहीं सताता। आज कई स्थानों पर मसीहियों पर कम होने वाले सतावों का यह भी एक कारण है– वहां तथाकथित मसीही अन्यों से भिन्न कार्य नहीं करते हैं। वे सच्चे मसीही नहीं हैं, और इसीलिए कोई उन्हें नहीं सताता। तौभी, इस तरह के अधिकांश 'मसीही' रविवार के दिन ''अपने विश्वास को अपने पड़ोसियों को बताने के लिए उत्साहित रहते हैं।' जब वे अपने पड़ोसियों को गवाही देते हैं, तो उन पड़ोसियों को यह जानकर हैरानी होती है कि वे नया जन्म पाए मसीही हैं। सबसे बुरा यह है कि वे अपने पड़ोसियों को सुसमाचार

के बारे में बहुत कम बताते हैं, उनका सोचना होता है कि भले कार्य या परमेश्वर के प्रति आज्ञाकारिता का उद्धार से कुछ संबन्ध है। कुल मिलाकर वे ''यीशु को व्यक्तिगत उद्धारकर्ता के रूप में स्वीकार'' करते हैं।

उनकी तुलना में आरम्भिक मसीही (जिनका वास्तव में यीशु प्रभु था) अंधकार में ज्योति के समान खड़े हुए; इस कारण उन्हें गवाही पर कक्षाएं देने या अपने पड़ोसियों को यह बताने की ज़रूरत नहीं हुई कि वे यीशु के अनुयायी हैं। उनसे उनकी धार्मिकता के बारे में प्रश्न किये जाने या निन्दा किये जाने पर उनके पास सुसमाचार को बताने के बहुत से अवसर होते थे। उन्हें केवल यीशु को अपने हृदयों में एक ओर प्रभु के रूप में रखने और बचाव के लिए तैयार रहने की ज़रूरत थी, जैसा पतरस ने भी कहा था।

आधुनिक मसीहियों और आरम्भिक मसीहियों के बीच भिन्नता का प्राथमिक कारण शायद आधुनिक मसीहियों का यह सोचना है कि एक मसीही की विशेषता यह है कि वह क्या जानता व विश्वास करता है। हम इसे ''धर्म सिद्धान्त'' कहते हैं और इसी कारण हम इसे सीखने पर केन्द्रित रहते हैं। इसकी तुलना में आरम्भिक मसीहियों ने यह माना कि एक मसीही की विशेषता यह है कि उसने क्या किया और इसी कारण वे परमेश्वर की आज्ञाओं की आज्ञाकारिता पर केन्द्रित थे। यह जानना रोचक है कि प्रथम चौदह शताब्दियों तक व्यावहारिक रूप में किसी भी मसीही के पास अपनी बाइबल नहीं थी, और इसी कारण उनके लिए ''प्रतिदिन बाइबल पढ़ना'' असंभव था, जो समकालीन मसीही उत्तरदायित्व के मूलभूत नियमों में से एक था। मैं निश्चय ही यह नहीं कह रहा हूं कि आधुनिक मसीहियों को प्रतिदिन बाइबल को नहीं पढ़ना चाहिए। मैं केवल इतना कह रहा हूं कि अधिकांश मसीहियों ने बाइबल अध्ययन करना इसका पालन करने से अधिक महत्वपूर्ण बना दिया है। हम अपने सही धर्म सैद्धान्तिक होने पर घमण्ड करते हैं (29, 999 संप्रदायों के उन सदस्यों के प्रतिकूल जो हमारे स्तर तक नहीं पहुंचे हैं), और तौभी झूठ, गपशप और पृथ्वी पर धन जमा किया जाना जारी रहता है।

यदि हम यह आशा करते हैं कि लोगों के हृदय सुसमाचार को ग्रहण करने हेतु नम्र बनें तो हमें इसे अपने कार्यों से करना है न कि सिद्धान्तों से।

परमेश्वर, महान सुसमाचार प्रचारक
God, the Greatest Evangelist

आइये परमेश्वर द्वारा उसके राज्य का निर्माण किये जाने पर कुछ और विचार करें। उसके कार्यों को अच्छी तरह से समझने पर ही हम उसके साथ अच्छी तरह से सहयोग कर सकते हैं।

जब लोग यीशु पर विश्वास करते हैं, तो यह कुछ ऐसा होता है जिसे वे अपने मनों में करते हैं (देखें रोमि. 10:9-10)। प्रभु यीशु पर विश्वास करके वे पश्चात्ताप करते हैं। वे स्वयं को अपनी इच्छा के सिंहासन से उतारकर यीशु को वहां बैठाते हैं। *विश्वास करना हृदय परिवर्तन को लाता है।*

इसी तरह से जब लोग यीशु पर विश्वास *नहीं* करते तो यह भी मनों में कुछ होने के समान है। वे परमेश्वर का *सामना (विरोध)* कर पश्चात्ताप नहीं करते। एक विवेकपूर्ण निर्णय लेने के द्वारा वे यीशु को अपने हृदय के सिंहासन से उतार देते हैं। *लगातार अपने हृदय को न बदलने का निर्णय लेते रहना अविश्वास लाता है।*

यीशु ने कहा कि सभी लोगों के मन इतने कठोर हैं कि यदि उन्हें पिता की ओर से न खींचा जाता तो कोई भी उसके पास नहीं आता (देखें यूह. 6:44)। परमेश्वर करुणापूर्वक प्रत्येक को भिन्न-भिन्न तरीकों से यीशु की निकटता में ला रहा है, उनके हृदय का स्पर्श कर, और कुछ ऐसा करते हुए जिससे वे अपने हृदयों को या तो कठोर या कोमल करने का निर्णय लेते रहें।

परमेश्वर लोगों को यीशु के निकट लाने के लिए किन साधनों का प्रयोग करता है?

सर्वप्रथम, वह अपनी सृष्टि का प्रयोग करता है। पौलुस ने लिखा,

> परमेश्वर का क्रोध तो उन लोगों की सब अभक्ति और अधर्म पर स्वर्ग से प्रगट होता है, जो सत्य को अधर्म से दबाए रखते हैं। इसलिए कि परमेश्वर के विषय का ज्ञान उनके मनों में प्रगट है, क्योंकि परमेश्वर ने उन पर प्रगट किया है। *क्योंकि उसके अनदेखे गुण, अर्थात्, उसकी सनातन सामर्थ, और परमेश्वरत्व जगत की सृष्टि के समय से उसके कामों के द्वारा देखने में आते हैं,* यहां तक कि वे निरुत्तर हैं (रोमि. 1:18-20, पर बल दिया गया है)।

ध्यान दें, पौलुस ने कहा कि लोगों ने उस ''सत्य को दबा'' दिया है जिसे ''उनमें प्रगट किया गया'' है। अर्थात् सत्य उनमें उठता है और उनका सामना करता है, तौभी वे इसे पीछे की ओर धकेल देते हैं और उस भीतरी धारणा का सामना करते हैं।

क्या सत्य प्रत्येक व्यक्ति में पाई जाने वाली एक दृढ़ धारणा है? पौलुस ने कहा कि वे परमेश्वर के अनदेखे गुण अर्थात, अर्थात् उसकी सनातन सामर्थ और परमेश्वरत्व'' के सत्य हैं जिसे ''उसके कामों'' के द्वारा प्रगट किया गया है। लोग परमेश्वर की सृष्टि की ओर देख कर यह भीतर से जानते हैं कि वह (परमेश्वर) वास्तव में है,[101] और वह बहुत ही शक्तिशाली है, अद्‌भुत रूप से रचनात्मक और अद्वितीय रूप से बुद्धिमान।

---

101. इसी कारण पवित्रशास्त्र घोषित करता है, ''मूर्ख ने अपने मन में कहा, 'कोई परमेश्वर है ही नहीं' (भजन. 14:1, पर बल दिया गया है)। केवल मूर्ख ही इस तरह की सच्चाई की कामना करता है।

पौलुस निष्कर्ष इस तरह से निकालता है कि इस तरह के लोग ''निरुतर'' हैं और वह सही कहता है। परमेश्वर लगातार प्रत्येक की ओर चिल्ला रहा है, स्वयं को प्रगट करते हुए और उन्हें अपने मनों को कोमल बनाने का प्रयास कराते हुए, परन्तु अधिकांश ने अपने कानों को बन्द कर लिया है। तौभी, परमेश्वर, उनके पूरे जीवन भर चिल्लाना बन्द नहीं करता, लगातार चमत्कारों को दिखाने के द्वारा, फूलों, पक्षियों, शिशुओं, बर्फ का गिरना, ओले, सेब और असंख्य चीज़ों के द्वारा।

यदि परमेश्वर है और वह अपनी सृष्टि के प्रगट किये जाने के समान महान है, तो निश्चय ही उसकी आज्ञा का पालन किया जाना चाहिए। यह भीतरी प्रकाशन एक दबा दिये जाने वाले संदेश के लिए चिल्लाता है: *पश्चात्ताप!* इसी कारण, पौलुस कहता है कि प्रत्येक ने परमेश्वर द्वारा पश्चात्ताप किये जाने की पुकार को सुन लिया है:

> परन्तु मैं कहता हूं, क्या उन्होंने नहीं सुना? सुना तो सही क्योंकि लिखा है कि उनके स्वर सारी पृथ्वी पर, और उनके वचन जगत की छोर तक पहुंच गए हैं (रोमि. 10:18)।

पौलुस वास्तव में भजन संहिता 19 से एक चिर परिचित पद को उद्धृत कर रहा था, जिसकी पूरी विषय वस्तु कहती है,

> आकाश ईश्वर की महिमा का वर्णन कर रहा है; और आकशमण्डल उसकी हस्तकला को प्रगट कर रहा है। दिन से दिन बातें करता है, और रात को रात ज्ञान सिखाती है। न तो कोई बोली है और न कोई भाषा जहां उनका शब्द सुनाई नहीं देता है। *उनका स्वर सारी पृथ्वी पर गूंज गया है, और उनके वचन जगत की छोर तक पहुंच गए हैं* (भजन. 19:1-4अ, पर बल दिया गया है)।

यह पुन: संकेत देता है कि परमेश्वर अपनी सृष्टि के द्वारा दिन और रात प्रत्येक से बोल रहा है, यदि लोगों ने परमेश्वर की सृष्टि के संदेश को ठीक से प्रतिक्रिया दी होती, तो वे मुंह के बल गिरकर इस तरह से पुकार उठते, ''महान सृष्टिकर्त्ता तू ने मुझे रचा है, और निस्संदेह तू ने मुझे अपनी इच्छा को पूरा करने को रचा है। इसलिए मैं स्वयं को तुझे सौंपता हूं।''

अन्य माध्यम, जिनके द्वारा परमेश्वर बोलता है

Another Means by Which God Speaks

इसी बाहरी/भीतरी प्रकाशन से संबन्धित अन्य भीतरी प्रकाशन है, वह जिसे परमेश्वर द्वारा दिया गया है, वह जो सृष्टि के चमत्कारों पर निर्भर नहीं है। भीतरी प्रकाशन प्रत्येक व्यक्ति का विवेक है, एक ऐसी आवाज़ जो लगातार परमेश्वर की व्यवस्था को प्रगट करती है। पौलुस ने लिखा,

> फिर जब अन्यजाति लोग जिन के पास व्यवस्था नहीं, स्वभाव ही से व्यवस्था की बातों पर चलते हैं तो व्यवस्था उनके पास न होने पर भी वे अपने लिये आप व्यवस्था हैं। वे व्यवस्था की बातें अपने-अपने हृदयों में लिखी हुई दिखाते हैं और उनके विवेक भी गवाही देते हैं, और उनकी चिन्ताएं परस्पर दोष लगातीं या उन्हें निर्दोष ठहराती हैं। जिस दिन परमेश्वर मेरे सुसमाचार के अनुसार यीशु मसीह के द्वारा मनुष्यों की गुप्त बातों का न्याय करेगा (रोमि. 2:14-16)।

अत: हर कोई सही या गलत को जानता है। या यदि इसे दृढ़ता से कहा जाए तो हर कोई जानता है कि परमेश्वर को क्या भाता है और क्या उसे अच्छा नहीं लगता है, और न्याय के दिन वह प्रत्येक व्यक्ति को इस बात को जानने के लिए ज़िम्मेदार ठहराएगा कि क्या चीज़ उसे अच्छी नहीं लगती हैं आयु बढ़ने पर, लोग अपने पाप और अपने विवेक की आवाज़ की उपेक्षा करने को सही ठहराते हैं, लेकिन परमेश्वर कभी भी उनमें पाई जानेवाली अपनी व्यवस्था के द्वारा बोलना बन्द नहीं करता।

तीसरा माध्यम

A Third Means

लेकिन यही सब कुछ नहीं है। परमेश्वर-महान सुसमाचार प्रचारक, जो प्रत्येक व्यक्ति को पश्चात्ताप कराने का कार्य कर रहा है, लोगों से अन्य माध्यमों के द्वारा भी बोलता है। एक बार फिर से हम पौलुस के शब्दों को पढ़ें:

> परमेश्वर का क्रोध तो उन लोगों की सब अभक्ति और अधर्म पर स्वर्ग से प्रगट होता है, जो *सत्य को अधर्म से दबाए रखते हैं* (रोमि. 1:18, पर बल दिया गया है)।

ध्यान दें कि पौलुस ने कहा, परमेश्वर का क्रोध प्रगट होता है, न कि किसी दिन *प्रगट होने वाला है,* परमेश्वर का क्रोध कई दुखद व त्रासदीपूर्ण घटनाओं जो मानवजाति को विपत्ति में डालती हैं चाहे वे छोटी हो या बड़ी, में प्रगट होता है। यदि परमेश्वर सर्वशक्तिमान है, तथा किसी भी चीज़ को करने व रोकने में समर्थ है, तो इस तरह की चीज़ों के होने पर कौन परमेश्वर की उपेक्षा कर सकता है, जो उसके क्रोध का केवल एक प्रगटीकरण हो सकती हैं। केवल संवेदनारहित शास्त्री और मूर्ख दर्शनशास्त्री ही इसे नहीं देख सकते। तथापि, परमेश्वर के क्रोध में भी उसका प्रेम और करुणा प्रगट हुए हैं, क्योंकि उसके क्रोध की सामग्री ज़रूरत से कम क्रोध के रूप में प्रगट होती है, और इसी कारण प्रेमपूर्वक उस अनन्त क्रोध के लिए चिताया गया है जो पश्चात्ताप करनेवालों की मृत्यु के पश्चात् प्रतीक्षा में है। यह तीसरा माध्यम है जिसका

प्रयोग परमेश्वर उन लोगों का ध्यान आकर्षित करने को करता है जिन्हें पश्चात्ताप करने की ज़रूरत है।

चौथा माध्यम

A Fourth Means

अन्ततः परमेश्वर न केवल सृष्टि के द्वारा लोगों को अपनी ओर लाने का प्रयास करता है, बल्कि सुसमाचार की बुलाहट के द्वारा भी। उसके सेवकों द्वारा उसकी आज्ञा का पालन किये जाने और शुभ समाचार की घोषणा किये जाने पर सृष्टि, विवेक और विपत्ति का यही संदेश एक बार पुनः इसकी पुष्टि करते हैं: *पश्चात्ताप की।*

आप देख सकते हैं कि जो कुछ हम प्रचार कार्य में करते हैं उसकी तुलना में जो परमेश्वर करता है वह कुछ भी नहीं है। वह *प्रत्येक* व्यक्ति के जीवन में *प्रत्येक* दिन और प्रत्येक क्षण प्रचार का कार्य करता रहता है, चाहे सैकड़ों सुसमाचार प्रचारक दशकों से सैकड़ों हज़ारों लोगों को क्यों न बोलते रहे हों; और ये प्रचारक एक समूह के लोगों को ही सामान्यता कुछ अवधि के लिए प्रचार करते हैं। वास्तव में, इस तरह के प्रचारकों को एकमात्र सुअवसर मिला है कि जिस गांव, शहर या घर के लोग उन्हें स्वीकार न करें वे वहां अपने पैरों की धूल भी झाड़ दें (देखें मत्ती 10:14)। इस सब के कहने का अर्थ यह है कि जब हम परमेश्वर के कभी न रुकने वाले, विश्वव्यापी, नाटकीय, भीतरी स्पर्श के प्रचार कार्य की तुलना अपने सीमित प्रचार-कार्य के साथ करते हैं, तो वास्तव में इसकी कोई तुलना नहीं है।

यह दृष्टिकोण प्रचार कार्य और परमेश्वर के राज्य के निर्माण में हमारे उत्तरदायित्व को अच्छी तरह से समझने में सहायता करता है। तथापि, अपनी भूमिका पर विशिष्ट रूप से विचार करने से पूर्व, एक और महत्वपूर्ण घटक है जिसे हमें अनदेखा नहीं करना चाहिए।

जैसा पहले भी कहा गया, लोग अपने मनों में विश्वास और पश्चात्ताप जैसी चीज़ें करते हैं। परमेश्वर चाहता है कि हर कोई स्वयं को दीन करे, अपने हृदय को नरम करे और पश्चात्ताप कर प्रभु यीशु पर विश्वास करे। परमेश्वर अन्त तक लोगों में असंख्य तरीकों से कार्य करता है।

बेशक, परमेश्वर प्रत्येक व्यक्ति के हृदय की दशा को जानता है। वह जानता है कि किनके हृदय नरम हो रहे हैं, और किनके कठोर। वह जानता है कि कौन उसके कभी न बंद होने वाले संदेश को सुन रहा है और कौन उसकी उपेक्षा कर रहा है। वह जानता है कि किनके हृदय ऐसा सोचते हैं कि उनके जीवन में आई विपत्ति उनके हृदयों को पश्चात्ताप के लिए खोलेगी। वह जानता है कि किनके हृदय इतने कठोर हैं कि उनके द्वारा पश्चात्ताप किये जाने की कोई आशा नहीं है (उदाहरण के लिए, उसने यिर्मयाह को तीन बार बताया कि वह इस्राएल के लिए प्रार्थना न करे क्योंकि

उनके हृदय पश्चात्ताप से दूर थे, देखें यिर्म. 7:16; 11:14; 14:11)।[102] वह जानता है कि किनके हृदय इस सीमा तक कोमल हो रहे हैं कि पवित्र आत्मा द्वारा कराया गया छोटा सा अहसास भी पश्चात्ताप के परिणाम को लाएगा।

इस सब को मन में रखते हुए, सुसमाचार की घोषणा करने और परमेश्वर के राज्य का निर्माण करने में कलीसियाओं के उत्तरदायित्व के बारे में हम क्या सीख सकते हैं?

सिद्धान्त # 1

Principle #1

सर्वप्रथम, क्या यह उपयुक्त प्रतीत नहीं होता कि परमेश्वर– महान सुसमाचार प्रचारक जो सारे कार्य का 95 प्रतिशत कर रहा है, जो प्रत्येक दिन प्रत्येक व्यक्ति को कठोरता से चिल्ला रहा है, वह संभवत: सुसमाचार की घोषणा करने को अपने सेवकों को भेजेगा, उनके लिए जिनके हृदय अधिक ग्रहण करने योग्य हैं, बजाय उनके जिनके हृदय कम ग्रहण करने योग्य हैं; मैं ऐसा सोचता हूं।

क्या यह संभव प्रतीत नहीं होता कि परमेश्वर– महान सुसमाचार प्रचारक, जो सभी लोगों में उनके जीवनों के प्रत्येक क्षण में प्रचार कर रहा है, वह उन तक सुसमाचार को संभवत: भेजने का चयन न करे जो वर्षों से उसके द्वारा कही जा रही अन्य दूसरी चीज़ों की उपेक्षा कर रहे हैं? वह उन लोगों को यह 5 प्रतिशत बताने में अपना समय क्यों बर्बाद करेगा कि उसे क्या अच्छा लगता है जबकि वह पहले से उसके द्वारा बताए गए 5 प्रतिशत की उपेक्षा कर रहे हों? मैं सोचता हूं कि परमेश्वर इस आशा से लोगों पर अपने न्याय को भेजेगा कि अपने हृदयों को नम्र करें। यदि वे ऐसा करें तो यह सोचना तर्कसंगत लगता है कि वह सुसमाचार की घोषणा करने को अपने सेवकों को भेजेगा।

हो सकता है कि कुछ इस तरह से कहें, परमेश्वर अपने सेवकों को उनके पास भेजेगा जिनके बारे में वह जानता है कि वे पश्चात्ताप नहीं करेंगे ताकि उसके न्याय आसन के सम्मुख खड़े होने पर वे निरुत्तर हों। तथापि, स्मरण रखें, कि पवित्रशास्त्र के अनुसार, इस तरह के लोग उसकी सृष्टि के कभी न समाप्त होने वाले प्रगटीकरण के कारण पहले से ही निरुत्तर हैं (देखें रोमि. 1:20)। अत: यदि परमेश्वर अपने किसी सेवक को उनके पास भेजे, तब ही वे उत्तरदायी होंगे, बल्कि वे और अधिक उत्तरदायी हो जाएंगे।

यह यदि सत्य है कि परमेश्वर अपने सेवकों को ग्रहण करनेवाले लोगों तक लेकर

102. इसके अतिरिक्त पवित्रशास्त्र सिखाता है कि परमेश्वर उन लोगों के हृदयों को निरन्तर कठोर करता है जो अपने हृदयों को उसके प्रति कठोर बनाए रहते हैं, जैसे फिरौन की तरह के लोगों को पश्चात्ताप करने की आशा नही की जा सकती।

जाता है, तो हमें जो कि उसके सेवक हैं प्रार्थनापूर्वक उससे बुद्धि को मांगना चाहिए जिससे हम उसके पास जा सकें जिनके लिए वह जानता है कि कटाई के लिए पक गए हैं।

पवित्रशास्त्र का एक उदाहरण

A Scriptural Example

इस सिद्धान्त को प्रेरितों के काम की पुस्तक में सुसमाचार-प्रचारक फिलिप्पुस की सेवकाई में सुन्दरता के साथ चित्रित किया गया है। फिलिप्पुस ने सामरिया की ग्रहण की जानेवाली भीड़ के बीच प्रचार किया था, लेकिन इसके बाद उसका निर्देशन एक स्वर्गदूत द्वारा एक विशिष्ट मार्ग की ओर किया गया। वहां उसे एक अद्वितीय रूप से खोज करनेवाले की ओर ले जाया गया:

> फिर प्रभु के एक स्वर्गदूत ने फिलिप्पुस से कहा, ''उठकर दक्खिन की ओर उस मार्ग पर जा, जो यरूशलेम से अज्जाह को जाता है, और जंगल में है'' वह उठकर चल दिया, और देखो, कूश देश का एक मनुष्य आ रहा था जो खोजा और कूशियों की रानी कन्दाके का मंत्री और खंजाची था, और भजन करने को यरूशलेम आया था। वह अपने रथ पर बैठा हुआ था, और यशायाह भविष्यद्वक्ता की पुस्तक पढ़ता हुआ लौटा जा रहा था। तब आत्मा ने फिलिप्पुस से कहा, ''निकट जाकर इस रथ के साथ हो ले।'' फिलिप्पुस ने उस ओर दौड़कर उसे यशायाह भविष्यद्वक्ता की पुस्तक पढ़ते हुए सुना और पूछा, ''कि तू जो पढ़ रहा है क्या उसे समझता भी है?'' उसने कहा, ''जब तक कोई मुझे न समझाए तो मैं क्योंकर समझूं'' और उसने फिलिप्पुस से विनती की, कि ''चढ़कर मेरे पास बैठ।'' पवित्रशास्त्र का जो अध्याय वह पढ़ रहा था, वह यह था:
>
> > कि वह भेड़ की नाईं बध होने को पहुंचाया गया, और जैसा मेम्ना अपने ऊन कतरनेवालों के सामने चुपचाप रहता है, वैसे ही उसने भी अपना मुंह न खोला। उसकी दीनता में उसका न्याय होने नहीं पाया, और उसके समय के लोगों का वर्णन कौन करेगा, क्योंकि पृथ्वी से उसका प्राण उठाया जाता है।
>
> इस पर खोजे ने फिलिप्पुस से पूछा; ''मैं तुझसे विनती करता हूं, यह बता कि भविष्यद्वक्ता यह किसके विषय में कहता है, अपने या किसी दूसरे के विषय में।'' तब फिलिप्पुस ने अपना मुंह खोला,

> और इसी शास्त्र से आरम्भ करके उसे यीशु का सुसमाचार सुनाया। मार्ग में चलते-चलते वे किसी जल की जगह पहुंचे, तब खोजे ने कहा, ''देख यहां जल है, अब मुझे बपतिस्मा लेने में क्या रोक है।'' फिलिप्पुस ने कहा, ''यदि तू सारे मन से विश्वास करता है तो हो सकता है:'' उसने उत्तर दिया ''मैं विश्वास करता हूं, कि यीशु मसीह परमेश्वर का पुत्र है।'' तब उसने रथ खड़ा करने की आज्ञा दी, और फिलिप्पुस और खोजा दोनों जल में उतर पड़े, और उसने उसे बपतिस्मा दिया। जब वे जल में से निकलकर ऊपर आए, तो प्रभु का आत्मा फिलिप्पुस को उठा ले गया, सो खोजे ने उसे फिर न देखा, और वह आनन्द करता हुआ अपने मार्ग चला गया (प्रेरित. 8:26-39)।

फिलिफुस को दैविक रूप से एक ऐसे व्यक्ति की सेवकाई करने को निर्देशित किया गया था जो आत्मिक रूप से इतना भूखा था कि उसने परमेश्वर की आरधना करने के लिए अफ्रीका से यरूशलेम तक की यात्रा की थी और यशायाह की भविष्यद्वागी के अंश के चर्मपत्र को भी खरीदा था। जब वह यशायाह का 53वां अध्याय पढ़ रहा था जो कि पुराने नियम का सबसे विशिष्ट अध्याय है जो मसीह के बलिदान का विवरण देता है, और इस बात से हैरान हो रहा था कि यशायाह ने यह किसके बारे में लिखा है, तब जो कुछ वह पढ़ रहा था उसे स्पष्ट करने के लिए वहां फिलिप्पुस था। एक व्यक्ति परिवर्तन के लिए पक चुका था। परमेश्वर ने उसके मन को जानते हुए फिलिप्पुस को भेजा था।

एक श्रेष्ठ मार्ग

A Better Way

स्वीकार करनेवाले लोगों तक पवित्र आत्मा द्वारा नेतृत्व किया जाना उसकी तुलना में कितना लाभकारी है जिसमें स्वीकार न करने वालों तक बार-बार या क्रामिक रूप से पहुंचा जाता है क्योंकि हम पोपभावना के साथ ऐसा सोचते हैं कि इसके अलावा उन तक प्रचार नहीं किया जा सकता। यह न भूलें कि जिस भी व्यक्ति से आपका सामना होता है परमेश्वर द्वारा उसे सुसमाचार प्रचार किया जा चुका होता है। हम लोगों से यह पूछकर अच्छा करेंगे कि उनका विवेक उनका यह निर्धारण करने में कैसे व्यवहार करता है कि वे परमेश्वर को ग्रहण करने वाले हैं या नहीं, क्योंकि हर कोइ किसी ने किसी माध्यम से दोष भावना का अनुभव करता है।

परिवर्तन है, जिसे आलौकिक रूप में इस अन्यजाति समूह के पास सुसमाचार का प्रचार करने को ले जाया गया। कुरनेलियुस निश्चय ही एक ऐसा व्यक्ति था जो अपने विवेक की आवाज़ सुनते हुए परमेश्वर को खोज रहा था जिसका उदाहरण उसके

दान देने और प्रार्थना के जीवन में मिलता है (देखें प्रेरित. 10:2)। परमेश्वर उसके साथ पतरस के द्वारा जुड़ा था और उसने पतरस के संदेश को खुले मन से सुना था और वह महिमामयी रूप से बचाया गया था।

हमारे लिए प्रार्थना करना तथा पवित्र आत्मा से उन लोगों तक नेतृत्व करना कितना बुद्धिमत्तापूर्ण होगा, जिनके हृदय खुले हैं, बजाय इसके कि विस्तृत और समय बर्बाद करनेवाली योजनाओं से अपने शहरों को चार भागों में बांटना और गवाही देने वाले दल की व्यवस्था करना कि वे प्रत्येक घर या अपार्टमेंट में जाएं। यदि पतरस यरूशलेम में मिशनरी रणनीति पर एक सभा में सम्मिलित रहता या फिलिप्पुस सामरिया में प्रचार करना जारी रखता तो कुरनेलियुस के घराने और कूशी खोजे तक पहुंचा नहीं जा सकता था।

बेशक, सुसमाचार प्रचारकों और प्रेरितों को ग्रहण करनेवाले और ग्रहण न करनेवाले लोगों की भीड़ तक पहुंचने से पहले सुसमाचार की घोषणा करने को ले जाया जाएगा। तौभी, उन्हें इस बारे में परमेश्वर की इच्छा को जानना चाहिए कि वह उनसे कहां प्रचार कराना चाहता है। पुनः प्रेरितों के काम पुस्तक में आत्मा के नेतृत्व में और आत्मा द्वारा अभिषिक्त लोगों के पवित्र आत्मा के साथ परमेश्वर के राज्य के निर्माण में सहयोग करने का विवरण मिलता है। आरम्भिक कलीसिया की तुलना में आधुनिक कलीसिया की विधियां कितनी भिन्न हैं। परिणाम कितने भिन्न हैं। जो इतना सफल था उसकी नकल क्यों न करें?

सिद्धान्त 2

Principle #2

इस पुस्तक के प्रथम भाग में विचार किये गए बाइबल के सिद्धान्त सुसमाचार प्रचार और परमेश्वर के राज्य के निर्माण में हमारी भूमिका को समझने में सहायक हैं।

यदि परमेश्वर ने इस तरह से तैयारी की कि सृष्टि, विवेक और विपत्ति पश्चात्ताप करने के लिए मानवता की बुलाहट हैं, तब सुसमाचार का प्रचार करनेवालों के लिये यह सुनिश्चित करने की ज़रूरत है कि वे प्रतिकूल संदेश की घोषणा नहीं कर रहे हैं। ऐसे बहुत से हैं। *उनका प्रचार प्रत्यक्ष रूप से उस प्रत्येक चीज़ के विपरीत है जो परमेश्वर पहले से ही पापियों से कहने का प्रयास कर रहा है।* उनका बाइबल रहित अनुग्रह का संदेश इस विचार को बढ़ावा देता है कि अनन्त जीवन को प्राप्त करने के लिए पवित्रता और आज्ञाकारिता महत्वपूर्ण नहीं हैं। उद्धार के लिए पश्चात्ताप की आवश्यकता का वर्णन न करने के द्वारा, इस पर बल देने के द्वारा कि उद्धार कार्यों से नहीं है (एक ऐसा तरीका जिसके लिए पौलुस ने कभी नहीं चाहा कि इसे समझा जाए), वे वास्तव में परमेश्वर के विरोध में कार्य करते हैं, लोगों को एक गहरे धोखे की ओर ले जाते हुए जो प्रायः उनके अनन्त भाग्य को मुहरबन्द

कर देता है, क्योंकि वे अब इस बारे में सुनिश्चित होते हैं कि वे बच गए हैं जबकि वास्तव में नहीं बचे होते। कितनी बड़ी त्रासदी है, कि जब परमेश्वर के संदेशवाहक वास्तव में परमेश्वर के विरोध में कार्य करते हैं, वे परमेश्वर के प्रतिनिधि होने का दावा करते हैं।

यीशु ने हमें ''पापों की क्षमा के लिये पश्चात्ताप'' करने का प्रचार किया (लूका 24:47)। परमेश्वर पापी के बारे में जो कह रहा है यह संदेश उसकी पुष्टि करता है। सुसमाचार का प्रचार उन लोगों के मनों को काटता है जिनके हृदय कठोर हैं। तौभी, कोमल आधुनिक सुसमाचार जो लोगों को बताता है कि परमेश्वर उनसे कितना अधिक प्रेम करता है (कुछ ऐसा जिसका वर्णन प्रेरितों के द्वारा सुसमाचार का प्रचार करने में नहीं किया गया था), उनका यह विचार करने में गलत नेतृत्व करता है कि उन्हें केवल ''यीशु को ग्रहण करने'' की ज़रूरत है। लेकिन राजाओं के राजा और प्रभुओं के प्रभु को हमारी ग्रहणीयता की ज़रूरत नहीं है। प्रश्न यह नहीं है, ''क्या आप यीशु को ग्रहण करते हैं?'' प्रश्न हैं, ''क्या यीशु आपको ग्रहण करता है?'' जवाब है, जब तक आप पश्चात्ताप कर उसकी अनुसरण करना आरम्भ न करें, आप उसके लिये घृणित हैं, और केवल उसकी करुणा ही नरक में आपकी नियति को रोकती है।

आधुनिक सुसमाचार की रोशनी में जो परमेश्वर के अनुग्रह को बहुत घटिया बनाता है, मैं सहायता नहीं कर सकता, परन्तु इस बात से हैरान होता हूं कि क्यों इतने सारे देशों में उन अगुवों द्वारा शासन किया जाता है जिन्होंने परमेश्वर द्वारा शासन किये जानेवाले अपने अधिकार को छोड़ दिया है (और यह विवादास्पद नहीं हैं; देखें दानि. 4:17, 25,32; 5:21; यूह. 19:11; प्रेरित. 12:23; रोमि. 13:1), पश्चिमी मिशनरियों के लिये अपने देशों को पूरी तरह से बन्द कर दिया है। क्या ऐसा इसलिये हो सकता है कि परमेश्वर उन देशों से झूठे सुसमाचार को दूर रखने का प्रयास कर रहा है?

सिद्धान्त 3

Principle #3

इस अध्याय में पहले विचार किये गए सिद्धान्त हमारी यह समझने में अच्छी तरह से सहायता करते हैं कि परमेश्वर उन लोगों को कैसे देखता है जो झूठे धर्मों के पीछे चल रहे हैं? क्या सारा दोष कलीसिया पर उसके द्वारा प्रभावी प्रचार कार्य न किये जाने के कारण आता है?

नहीं, ये लोग सत्य से अनजान नहीं हैं। हो सकता है कि वे उस प्रत्येक चीज़ को न जानते हों जो बाइबल पर विश्वास करनेवाला मसीही जानता है, लेकिन वे सभी जानते हैं कि परमेश्वर स्वयं को सृष्टि, विवेक और विपत्ति के द्वारा प्रगट कर रहा है। वे ऐस लोग हैं जिन्हें परमेश्वर उनके पूरे जीवन भर पश्चात्ताप करने को बुलाता

रहा है, चाहे उन्होंने कभी किसी मसीही को न देखा हो या सुसमाचार को न सुना हो। इसके अतिरिक्त, वे या तो अपने हृदयों को परमेश्वर की ओर नरम कर रहे हैं या फिर कठोर।

पौलुस ने अविश्वासियों की अज्ञानता के बारे में लिखा और उनकी अज्ञानता के कारण को प्रगट किया:

> इसलिये मैं यह कहता हूं, और प्रभु में जताए देता हूं कि जैसे अन्यजातीय लोग अपने मन की अनर्थ रीति पर चलते हैं, तुम अब से फिर ऐसे न चलो। क्योंकि उनकी बुद्धि अंधेरी हो गई है और उस अज्ञानता के कारण जो उनमें है, *और उनके मन की कठोरता के कारण* वे परमेश्वर के जीवन से अलग किये हुए हैं। और वे *सुन्न होकर* लुचपन में लग गए हैं, कि सब प्रकार के गन्दे काम लालसा से किया करें (इफि. 4:17-19)।

ध्यान दें कि अन्यजातियों की अज्ञानता का कारण ''उनके हृदयों की कठोरता'' है। पौलुस ने यह भी घोषित किया कि वे ''सुन्न'' हो गए हैं। निस्संदेह, वह उनके हृदयों की दशा के बारे में बोल रहा था। सुन्न होना लोगों के हाथों में लगातार किसी कठोर चीज़ के रगड़ खाने से उत्पन्न होता है। सुन्न त्वचा संवेदना रहित हो जाती है। इसी तरह से जब लोग लगातार सृष्टि, विवेक और विपत्ति के द्वारा परमेश्वर की बुलाहट का सामना करते हैं, तब उनके हृदय सुन्न हो जाते हैं, स्वयं को ईश्वरीय बुलाहट के प्रति संवेदना रहित बनाते हुए। इसी कारण आंकड़े संकेत देते हैं कि लोग बूढ़े होने पर कम ग्रहण करनेवाले हो जाते हैं। व्यक्ति जितना बूढ़ा होता है, तब उसके पश्चात्ताप करने की संभावना भी कम होती है। *बुद्धिमान प्रचारक अधिकतर युवा लोगों को निशाना बनाते हैं।*

अविश्वास करने का दोष
The Guilt of the Unbelieving

इसका अतिरिक्त प्रमाण कि परमेश्वर लोगों को तब भी दोषी ठहराता है जबकि उन्होंने कभी भी किसी मसीही प्रचारक से न सुना हो, कि वह सक्रिय रूप से उनका न्याय करता है। यदि परमेश्वर उन्हें उनके पापों के लिए दोषी नहीं ठहराता तो वह उन्हें दण्डित भी नहीं करता। क्योंकि वह उन्हें दण्डित करता है, तथापि, हम आश्वस्त हो सकते हैं कि वह उन्हें उत्तरदायी ठहराता है, और यदि वह उन्हें उत्तरदायी ठहराता है, तो उन्हें यह जानना है कि वे ऐसा क्या कर रहे हैं जो उसे नहीं भाता।

उसके पश्चात्ताप करने की बुलाहट का विरोध करने वालों को परमेश्वर द्वारा दण्डित किये जाने का एक तरीका उन्हें उनकी पाप पूर्ण इच्छाओं पर ''छोड़ देना'' है कि वे उस गहरी भ्रष्टता के दास हो जाएं। पौलुस ने लिखा:

इस कारण कि *परमेश्वर को जानने पर* भी उन्होंने परमेश्वर के योग्य बड़ाई और धन्यवाद न किया, परन्तु व्यर्थ व्यभिचार करने लगे, यहां तक कि उनका निर्बुद्धि मन अंधेरा हो गया। वे अपने आप को बुद्धिमान जताकर मूर्ख बन गए। और अविनाशी परमेश्वर की महिमा को नाशमान मनुष्य, और पक्षियों और चौपायों, और रेंगने वाले जन्तुओं की मूरत की समानता में बदल डाला।

इस कारण *परमेश्वर ने* उन्हें उनके मन की अभिलाषाओं के अनुसार अशुद्धता के लिए *छोड़ दिया* कि वे आपस में अपने शरीरों का अनादर करें। क्योंकि उन्होंने परमेश्वर की सच्चाई को बदलकर झूठ बना डाला, और सृष्टि की उपासना और सेवा की, न कि उस सृजनहार की जो सदा धन्य है। आमीन

इसलिये *परमेश्वर ने उन्हें* नीच कामनाओं के वश में *छोड़ दिया,* यहां तक कि उनकी स्त्रियों ने भी स्वाभाविक व्यवहार को, उससे जो स्वभाव के विरुद्ध है, बदल डाला। वैसे ही पुरुष भी स्त्रियों के साथ स्वाभाविक व्यवहार छोड़कर आपस में कामातुर होकर जलने लगे। और पुरुषों ने पुरुषों के साथ निर्लज्ज काम करके अपने भ्रम का ठीक फल पाया।

और जब उन्होंने परमेश्वर को पहचानना न चाहा, इसलिए *परमेश्वर ने भी* उन्हें उनके निकम्मे मन पर *छोड़ दिया;* कि वे अनुचित काम करें। सो वे सब प्रकार के अधर्म, और दुष्टता, और लोभ, और बैरभाव से भर गए; और डाह, और हत्या, और झगड़े और छल, और ईर्ष्या से भरपूर हो गए, और चुगलखोर, बदनाम करनेवाले, परमेश्वर के देखने में घृणित, औरों का अनादर करनेवाले, अभिमानी, डींगमार, बुरी-बुरी बातों के मानने वाले, माता-पिता की आज्ञा न मानने वाले, निर्बुद्धि, विश्वासघाती, मयारहित और निर्दयी हो गए। वे तो परमेश्वर की यह विधि जानते हैं कि ऐसे-ऐसे काम करने वाले मृत्यु के दण्ड के योग्य हैं, तौभी न केवल आप ही ऐसे काम करते हैं, वरन करने वालों से प्रसन्न भी होते हैं (रोमि. 1:21-32, पर बल दिया गया है)।

ध्यान दें कि पौलुस ने मानव दोष और उत्तरदायित्व का परमेश्वर के सम्मुख सच्चाई पर कितना बल दिया। वे ''परमेश्वर को जानते तो थे'' लेकिन ''उन्होंने उसे परमेश्वर के रूप में आदर नहीं दिया, या न ही उसे धन्यवाद दिया।'' उन्होंने ''झूठ के लिये परमेश्वर के सत्य को बदल डाला।'' अत: उनका सामना परमेश्वर के सत्य से होना चाहिए। इसलिए परमेश्वर ने भी उन्हें बदनाम होने के लिए ''छोड़ दिया'' उस सीमा

तक जहां वे लोग ऐसी अस्वाभाविक चीज़ें करते हैं, जिससे वे पाप के दास बन जाते हैं। इसके बदले में परमेश्वर कहता है, ''जबकि तुम्हें मेरी सेवा करनी चाहिए तुम पाप की सेवा करना चाहते हो? तो आगे बढ़ो। मैं तुम्हें नहीं रोकूंगा, और तुम उस ईश्वर के अधिक दास बनते जाओगे जिससे तुम प्रेम करते हो।''

मेरा मानना है कि एक व्यक्ति न्याय के इस रूप पर परमेश्वर की करुणा के संकेत के रूप में विचार कर सकता है, इस तरह यह सोचना उपयुक्त होगा कि लोगों के अधिक विकृत और पापी हो जाने पर, उन्हें इसे जानकर जाग उठना है। हैरानी की बात है कि अधिकांश समलिंगगामी स्वयं से इस तरह का प्रश्न क्यों नहीं करते, ''मैं अपने ही लिंग के लोगों के प्रति आकर्षित क्यों होता/होती हूं जिनके साथ मैं पूर्ण यौन संबंध स्थापित नहीं कर सकता?'' एक भाव में यह तर्क दिया जा सकता है कि परमेश्वर ने निश्चय ही ''उन्हें उनके मार्ग पर छोड़ दिया'' (क्योंकि वे अपनी भ्रष्टता को उपयुक्त बताते हैं), लेकिन केवल एक वैकल्पिक भाव में, और इसका कारण केवल इतना है कि वह उनके जाग उठने की आशा करता है जिससे वे पश्चात्ताप कर उसकी अद्‌भुत करुणा को अनुभव कर सकें।

केवल समलिंगी लोगों को ही स्वयं से प्रश्न नहीं करने हैं। पौलुस ने असंख्य दास बनानेवाले पापों को सूचित किया जो कि उन पर परमेश्वर के न्याय का प्रमाण हैं जो उसकी सेवा करने से इन्कार कर देते हैं। करोड़ों लोगों को अपने बेतुके व्यवहार के लिए स्वयं से प्रश्न करना चाहिए: ''मैं अपने परिवार से घृणा क्यों करता हूं?'' ''मुझे गपशप के फैलाने से संतुष्टि क्यों मिलती है?'' ''मेरे पास जो कुछ है उससे मुझे संतुष्टि क्यों नहीं मिलती?'' ''मैं विकृत अश्लीलता को देखने के लिए विवश क्यों हो जाता हूं?'' परमेश्वर ने उन्हें इन ईश्वरों के दास होने के लिये छोड़ दिया है।

बेशक कोई भी किसी भी समय अपने हृदय को नरम करते हुए पश्चात्ताप कर यीशु में विश्वास रख सकता है। पृथ्वी के सबसे कठोर पापियों ने ऐसा किया है, और परमेश्वर ने उन्हें उनके पापों से शुद्ध कर मुक्त कर दिया है। जब तक लोग सांस ले रहे हैं, परमेश्वर तब तक उन्हें पश्चात्ताप करने का अवसर देता रहता है।

कोई बहाना नहीं

No Excuses

पौलुस के अनुसार पापियों के पास कोई बहाना नहीं। दूसरों की आलोचना करने के द्वारा वे प्रगट करते हैं कि वे जानते हैं कि क्या सही और क्या गलत है, और इसी कारण वे परमेश्वर की दण्डाज्ञा के योग्य हैं:

> सो हे दोष लगानेवाले, तू कोई क्यों न हो; तू निरुत्तर है! क्योंकि
> जिस बात में तू दूसरे पर दोष लगता है, उसी बात में अपने आप

> को भी दोषी ठहराता है, इसलिये कि तू जो दोष लगाता है, आप ही वही काम करता है। और हम जानते हैं कि ऐसे ऐसे काम करने वालों पर परमेश्वर की ओर से ठीक-ठीक दण्ड की आज्ञा होती हैं। और हे मनुष्य, तू जो ऐसे-ऐसे काम करने वालों पर दोष लगाता है, और आप वे ही काम करता है; क्या यह समझता है, कि तू परमेश्वर की दण्ड की आज्ञा से बच जाएगा? क्या तू उसकी कृपा, और सहनशीलता और धीरज रूपी धन को तुच्छ जानता है? और क्या यह नहीं समझता, कि परमेश्वर की कृपा तुझे मन फिराव को सिखाती है? (रोमि. 2:1-4)।

पौलुस ने कहा कि परमेश्वर की कृपा और सहनशीलता का कारण यह है कि वह लोगों को पश्चात्ताप करने का अवसर देता है। इसके अलावा, पौलुस आगे प्रगट करता है कि पश्चात्ताप करनेवाले तथा पवित्र जीवन व्यतीत करनेवाले परमेश्वर के राज्य के वारिस होंगे:

> पर अपनी कठोरता और हठीले मन के अनुसार उसके क्रोध के दिन के लिए, अपने निमित्त क्रोध कमा रहा है। वह हर एक को उसके कामों के अनुसार बदला देगा। जो सुकर्म में स्थिर रहकर महिमा और आदर, और अमरता की खोज में हैं, उन्हें वह अनन्त जीवन देगा। पर जो विवादी हैं, और सत्य को नहीं मानते, वरन अधर्म को मानते हैं, उन पर क्रोध और कोप पड़ेगा। और क्लेश, संकट हर एक मनुष्य के प्राण पर जो बुरा करता है आएगा, पहले यहूदी पर, फिर यूनानी पर, पर महिमा और आदर और कल्याण हर एक को मिलेगा, जो भला करता है, पहले यहूदी को फिर यूनानी को (रोमि. 2:5-10)।

स्पष्ट है कि पौलुस उनके साथ सहमत नहीं होगा जो यह सिखाते हैं कि ''यीशु को अपने उद्धारकर्त्ता के रूप में स्वीकार करनेवाले'' लोग निश्चय ही अनन्त जीवन पाते हैं। इसके विपरीत ये वे हैं जो पश्चात्ताप करते तथा ''जो दृढ़ता के साथ भलाई करते हुए महिमा, आदर और अमरता की खोज में रहते हैं।''

लेकिन क्या ये यह संकेत नहीं देता कि मसीहियत की तुलना में अन्य धर्मों के लोग पश्चात्ताप करने और आज्ञापालन करने के द्वारा बच सकते हैं?

नहीं, यीशु के बिना कोई उद्धार नहीं है, केवल यीशु ही लोगों को उनके पापों की गुलामी से छुड़ा सकता है।

लेकिन यदि वे पश्चात्ताप करना चाहते हैं, तो वे यीशु को कैसे पुकारेंगे जबकि उन्होंने उसके बारे में पहले कभी न सुना हो?

परमेश्वर, जो कि सभी लोगों के हृदयों को जानता है, उस पर स्वयं को प्रगट करेगा जो निष्ठा के साथ उसकी खोज में रहता है। यीशु ने प्रतिज्ञा की, ''ढूंढोगे तो पाओगे'' (मत्ती 7:7), और परमेश्वर चाहता है कि हर कोई उसे खोजे (देखें प्रेरित. 17:26-27)। जब वह एक ऐसे व्यक्ति को देखता है जिसका हृदय उसके अनवरत रहनेवाले प्रचार कार्य को प्रतिक्रिया देता है, तो वह उस व्यक्ति तक अपने सुसमाचार को पहुंचाता है, जैसा उसने कूशी खोजे और कुरनेलियुस के घराने के साथ किया था। परमेश्वर कलीसिया की साझेदारी के साथ सीमित नहीं हो जाता है, जैसा उसने तर्शीश के शाऊल के परिवर्तन में प्रमाणित किया था। यदि उस निष्ठावान खोज करनेवाले तक सुसमाचार को पहुंचाने वाला कोई न हो, तो परमेश्वर स्वयं जाएगा। मैंने ऐसी असंख्य समकालीन घटनाओं के बारे में सुना है जहां लोग बन्द देशों में यीशु के दर्शन पाकर परिवर्तित हो गए।

लोग धार्मिक क्यों हैं

Why People Are Religious

सच्चाई यह है कि झूठे धर्मों को मानने वाले अधिकांश लोग सत्य की खोज करने वाले नहीं हैं। इसके विपरीत वे धर्मी हैं क्योंकि वे अपने पापों के आवरण की खोज कर रहे हैं। अपने विवेकों की न मानने पर धर्म के भेष में छिप गए हैं। अपने धर्मोत्साह के कारण वे स्वयं को यह स्वीकार कराते हैं कि वे नरक जाने के योग्य नहीं हैं। यह उसी तरह से ''मसीही'' धर्म के लिये भी सत्य है (जिसमें घटिया अनुग्रह वाले प्रचारीय मसीही आते हैं)। जिस तरह से यह बौद्ध, मुस्लिम और हिन्दु के लिए सत्य है। अपने धर्म का पालन करने पर भी उनका विवेक उन्हें दण्डित करता है।

जब बौद्ध धर्म के लोग श्रद्धा के साथ अपनी मूर्तियों या साधुओं के सामने झुकते हैं जो कि उनके सामने घमण्ड से बैठे होते हैं तब उनके विवेक उन्हें बताते हैं कि वे गलत कर रहे हैं। जब एक हिन्दु एक गली के भिखारी के प्रति अपने में दया की कमी को सही ठहराता है, यह मानते हुए कि भिखारी अपने पिछले जीवन में किये गए पाप का दण्ड उठा रहा है, तब उसका विवेक उसे दण्डित करता है। जब एक मुसलमान अल्लाह के नाम में एक ''गैर-मुसलमान'' का सिर काटता है, तब उसका विवेक उसके हत्यारे पाखण्ड के प्रति पुकार उठता है। जब एक प्रचारीय ''मसीही'' पृथ्वी पर अपना धन जमा करता है, नियमित रूप से टेलीविज़न पर यौन-अशुद्धता को देखते हुए और सह-कलीसियाई सदस्यों के विषय में गपशप करता है, यह भरोसा करते हुए कि वह अनुगह से बचाया गया है, तब उसका हृदय उसे दण्डित करता है। ये सभी उन लोगों के उदाहरण हैं जो पाप करते रहना चाहते हैं तथा जिन्होंने विश्वास करने के लिए धर्म के झूठ को पा लिया है, जिससे वे नियमित रूप से पाप कर सकते हैं।

अन्त में, यह कहना है कि परमेश्वर उन लोगों की चिन्ता नहीं करता जो लापरवाह लोग होने के लिए झूठे धर्मों के पीछे चल रहे हैं, जो तरस खाए जाने के योग्य हैं क्योंकि उन्होंने कभी भी सत्य के बारे में नहीं सुना। उनकी लापरवाही या अज्ञानता का दोष कलीसिया को नहीं दिया जा सकता कि उसने उनमें प्रभावी प्रचार नहीं किया।

पुन:, यद्यपि हम जानते हैं कि परमेश्वर चाहता है कि कलीसिया संसार भर में सुसमाचार का प्रचार करे, हमें भी उसके आत्मा के नेतृत्व में वहां जाना चाहिए जहां ''खेत कटाई के लिए पके हुए हैं'' (देखें यूह. 4:35), जहां लोग ग्रहण करनेवाले हैं क्योंकि वे परमेश्वर द्वारा उन तक पहुंचने के अनवरत् प्रयास को किये जाने के द्वारा अपने मनों को नरम बना रहे हैं।

सिद्धान्त # 4

Principle #4

इस अध्याय में पहले विचार किये गए बाइबल के सत्य से हम जिस अन्तिम सिद्धान्त को सीख सकते हैं, वह है: यदि परमेश्वर इस आशा में सक्रिय रूप से पापियों का न्याय कर रहा है कि वे अपने हृदयों को नरम करें, तो हमें यह अपेक्षा करनी चाहिए कि कुछ पापी परमेश्वर के न्याय को सहने या दूसरों को इसे सहते हुए देखने के पश्चात् अपने हृदयों को नरम करेंगे। अत:, विपत्तियों के पश्चात् उन लोगों तक पहुंचने के सुअवसर हैं जिन तक पहले कोई नहीं पहुंचा है।

मसीहियों को ऐसे स्थानों में सुसमाचार को बांटने के अवसर ढूंढने चाहिए जहां लोग दुख उठा रहे हैं। उदाहरण के लिए, जिन्होंने हाल में ही अपने प्रियजनों को खोया है, वह उसे सुनने के लिए अधिक खुल सकते हैं जो परमेश्वर उन्हें सुनाना चाहता है। जब मैंने एक पास्टर के रूप में सेवा की, मैंने पवित्रशास्त्र के इस पद को स्मरण करते हुए हमेशा अंत्येष्टि के समय सुसमाचार सुनाने के अवसर को रोक दिया, ''जेवनार के घर जाने से शोक ही के घर जाना उत्तम है; क्योंकि सब मनुष्यों का अन्त यही है, *और जो जीवित है वह मन लगाकर इस पर सोचेगा* (सभो. 7:2)।

जब लोग बीमारी, आर्थिक हानि, टूटे संबन्धों, प्राकृतिक विनाश और पाप के कई परिणामों तथा पाप पर आनेवाले न्याय के कारण दुख उठाते हैं, तब उन्हें यह जानने की ज़रूरत है कि उनके दुख उन्हें जगाने की बुलाहट है। अस्थायी दुखों के द्वारा परमेश्वर लोगों को अनन्त न्याय से बचाने का प्रयास कर रहा है।

सारांश में

In Summary

अपने राज्य के निर्माण के लिए परमेश्वर बहुत अधिक कार्य करता है। हमारा उत्तरदायित्व बुद्धिमानी के साथ उसको सहयोग देने का है।

सभी विश्वासियों को अंधकार में रहनेवालों के ध्यान को आकर्षित करने के लिए पवित्रता और आज्ञाकारिता का जीवन जीना चाहिए, और उन्हें अपने भीतर पाई जाने वाली आशा के बचाव के लिए सदैव तैयार रहना चाहिए।

परमेश्वर सभी लोगों को अपने हृदयों को नरम करने व पश्चात्ताप करने को प्रेरित कर रहा है, निरन्तर उनसे सृष्टि, विवेक और विपत्ति के द्वारा बोलते हुए, और कई बार सुसमाचार की बुलाहट के द्वारा।

पापी जानते हैं कि वे परमेश्वर की आज्ञा का पालन नहीं कर रहे हैं, और चाहे उन्होंने कभी भी सुसमाचार को न सुना हो, उन्हें उसे लेखा देना है। उनका पाप उनके हृदय की कठोरता का प्रमाण है। पाप के प्रति उनकी गुलामी में वृद्धि होना इस बात का संकेत है कि परमेश्वर का क्रोध उन पर है।

धार्मिक लोग आवश्यक रूप में सत्य की खोज नहीं कर रहे हैं। वे अपने धर्म के झूठ पर विश्वास करते हुए अपने पाप को उचित ठहरा रहे हैं।

परमेश्वर प्रत्येक व्यक्ति के मन की दशा को जानता है। हो सकता है कि वह उन तक सुसमाचार को लेकर जाए जो ग्रहण करनेवाले नहीं हैं, वह हमें उनकी ओर भी लेकर जा सकता है जो सुसमाचार को ग्रहण करनेवाले हैं।

जब परमेश्वर दुखों के द्वारा लोगों के हृदयों को नरम बनाने का कार्य करता है, हमें उन अवसरों को सुसमाचार की घोषणा करने को पकड़ लेना चाहिए।

परमेश्वर चाहता है कि हम सारे संसार में सुसमाचार को लेकर जाएं, लेकिन वह यह भी चाहता है कि इस महान आज्ञा की पूर्ति हेतु हम उसके आत्मा की इच्छा को जानें, जैसा प्रेरितों के काम पुस्तक में उद्धृत है।

परमेश्वर स्वयं को उस व्यक्ति पर प्रगट करेगा जो ईमानदारी से उसके बारे में जानना चाहता है।

परमेश्वर चाहता है कि हमारा संदेश उसके संदेश से सहमत हो।

एक दिन प्रत्येक सांप्रदायिक समूह के प्रतिनिधि परमेश्वर के सिंहासन के सम्मुख आराधना कर रहे होंगे, और हमें अन्त तक परमेश्वर के कार्य में अपने सहयोग को देना है। अतः परमेश्वर के सभी लोगों को मसीह के प्रेम को प्रत्येक संप्रदाय के व्यक्ति को दिखाना चाहिए। परमेश्वर अपने सेवकों को भिन्न संस्कृति के कुछ विशिष्ट लोगों तक लेकर जा सकता है, या तो कलीसिया की स्थापना करनेवालों को भेजने का समर्थन देने के द्वारा या स्वयं जाकर। जिन्हें भेजा गया है उन्हें शिष्यों को बनाना चाहिए, स्वयं को शिष्य-निर्माता सेवक प्रमाणित करते हुए।